भारत छोड़ो आंदोलन में जयप्रकाश नारायण का योगदान

डॉ. शहनाज शेख
इतिहास विभाग प्रमुख
यशवंत महाविद्यालय वायगांव (नि.) वर्धा
shahanaj.ymy@gmail.com

सारांश (Abstract) :-

द्वितीय विश्व युद्ध की स्थिति बिगड़ते देख अमेरिका और चीन की सलाह पर इंग्लैंड की सरकार ने सर स्टैफर्ड क्रिप्स के द्वारा भारतीयों को कुछ विशेष राजनीतिक सुविधा देने की एक योजना भेजी। यह योजना कूटनीतिक चालों से भरी हुई थी। जिसे गांधीजी ने दिवालिया बैंक हो जाने के बाद की तारीख का 'पोस्ट डेटेड चेक' बता कर उसे अस्वीकार कर दिया। (अवधबिहारी, पृष्ठ 65) अंत में 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हुआ और अहिंसक तरीके से व्यापक से व्यापक जन-संघर्ष करने के लिए जनता को आवाहन किया गया। उसी दिन गांधीजी ने अपने भावोत्तेजक भाषण में **'करो या मरो'** का नारा दिया और लोगों को आगाह किया कि यदि सभी कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिये जाए तो हर व्यक्ति अपना नेतृत्व स्वयं करें। इसके साथ ही पूरे देश में भीषण आंदोलन छिड़ गया। इस समय जयप्रकाश हजारीबाग जेल के सिखंचो के भीतर थे। वहां जेल में ही उन्होंने लोगों को प्रेरित कर 'सोशलिस्ट कंसोलिडेशन' का गठन किया। बंदियों ने जेल में ही असहयोग आंदोलन शुरू किया किंतु जयप्रकाश के अंदर धधकती हुई ज्वाला का शमन इस प्रतीकात्मक असहयोग से नहीं हुआ। जयप्रकाश ने अपने अन्य साथियों के साथ तय किया कि किसी तरह आंदोलन में उन लोगों का सक्रिय योगदान होना चाहिए और इसमें जेल की दीवार आड नहीं आना चाहिए। (सुधांशु रंजन, पृष्ठ 64-65) प्रस्तुत शोध पत्र मे सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयप्रकाश ने सभी वरिष्ठ नेताओं के गिरफ्तारी के बाद आंदोलन को कैसे जीवित तथा सक्रिय रखा। अंग्रेज सरकार को अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ अपने क्रियाकलापों के द्वारा कैसे हतबल कर दिया। अंग्रेजी शासन ने उन्हें हिंसक कहकर उनकी निंदा की परंतु गांधीजी द्वारा अंग्रेजों को कैसे प्रतिउत्तर मिला। इसका विस्तृत विवरण 'भारत छोड़ो आंदोलन में जयप्रकाश नारायण का योगदान' इस शोधपत्र द्वारा स्पष्ट किया गया है।

शब्दकोश (keywords) :-

महात्मा गांधी द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान, हजारीबाग जेल से पलायन, भारत छोड़ो आंदोलन के नेता, क्रांतिकारियों के पीछे अंग्रेजी सरकार हतबल, जयप्रकाश गिरफ्तार तथा गांधीजी द्वारा क्षोभ।

अनुसंधान के उद्देश्य (Objective of Research Paper) :-

1. जयप्रकाश नारायण की भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका को अधिक स्पष्ट करना।

2. भारत छोड़ो आंदोलन के समय सभी वरिष्ठ नेताओं के गिरफ्तारी के बाद आंदोलन को अपनी क्रांतिकारी नीतियों से सक्रिय कैसे बनाया इसे स्पष्ट करना।

3. अपने क्रांतिकारी विचारधारा तथा कार्यकलापों द्वारा अंग्रेजों को कैसे हतबल किया। इसे स्पष्ट करना।

4. स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्र के प्रति समर्पण, त्याग और सेवा के योगदान का संक्षिप्त विवरण स्पष्ट करना।

परिचय (Introduction) :-

भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव देश के जन भावना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हो सकती है, किंतु भारत छोड़ो आंदोलन के विचार तथा उसके मार्गदर्शन के सिद्धांत की रूपरेखा समाजवादी के मस्तिष्क की ही उपज थी। भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव को पारित होने के बाद कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को जब कैद कर लिया गया तो आंदोलन को दिशा और गति देने वाले अधिकांश नेता या तो समाजवादी थे अथवा समाजवादी विचारधारा के पोषक थे। विदेशी शासन के साथ समझौता से परे विचार रखने वाले जयप्रकाश जैसे प्रतिबध्द समाजवादी ऐसे क्रियाकलापों को भी स्वीकार करने को तत्पर थे जो धन-जन की क्षति से संबंधित था। अपने इन नीतियों के तहत समाजवादियों ने आंदोलन के क्रम में ऐसे कार्यों को संपन्न किया जो कांग्रेस और गांधी दर्शन के सिद्धांत के प्रतिकूल था। (सुधाकरलाल श्रीवास्तव,पृष्ठ 115)

म. गांधी द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान :-

बम्बई में 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया और दूसरी ही दिन गांधी सहित सभी प्रमुख नेता कैद कर लिये गए। सारे देश में विद्रोह की ज्वाला धधक रही थी हजारीबाग जेल राजनीतिक बंदियों के से खचाखच भरा हुआ था। देश में इस महान क्रांति के अवसर पर असहाय अवस्था में जेल की चारदीवारी में बंद रहना जयप्रकाश के लिए असह्य था। उन्होंने जेल बंदियों को संगठित करके गांधी के नारे 'करो या मरो' की याद दिलाई। (सीता श्रीवास्तव,पृष्ठ17-18) जयप्रकाश इस समय क्रोधित एवं क्षुब्ध थे। उनकी स्थिति पिंजडे में बंद पक्षी की भांति थी। उन्होंने जेल से भागने का निश्चय किया और अपने कुछ विश्वस्त साथियों से मिलकर योजना बनाई। दिवाली का दिन जेल से भागने के लिए निश्चित किया गया। उनके साथी योगेंद्र शुक्ल, सूर्यनारायण सिंह, गुलाबचंद्र सालिगराम एवं रामानंद मिश्र आदि थे। निर्धारित दिन छ: मिनट में धोतियो में गांठ लगाकर बनाई गई रस्सी के सहारे जयप्रकाश एवं उनके साथी जेल की दीवार को फांद गए। उनके भागने की खबर अंग्रेजी पुलिसकर्मियों को दूसरे दिन सुबह लगी। पूरी रात उन्होंने जंगलों और झाड़ियों में चलते हुए गुजार दी। जयप्रकाश इस समय सायटिका से पीड़ित थे। उन्हें उनके साथियों ने अपने कंधों का सहारा दिया। कुछ यात्रा बैलगाड़ी से की। शाहाबाद जिले से गुजरते हुए उन लोगों ने डेरी आन-सोन से रेलगाड़ी पकड़ी और मुगलसराय होते हुए बनारस पहुंचे। इस समय जयप्रकाश को बंदी बनाने के लिए पाच हजार रुपए का इनाम घोषित किया जा चुका था।(अंजनीकुमार जमदग्नि,पृष्ठ12-13)

हजारीबाग जेल से पलायन :-

8 नवंबर, 1942 की रात को जब जयप्रकाश हजारीबाग जेल की 17 फुट ऊंची दीवार फांदकर बाहर आए तब यह ऊंची छलांग किसी गहरे निश्चय से पैदा नहीं हुई थी। जिने का जो रास्ता उन्होंने संकल्पपूर्वक निर्धारित किया था, उसमें आने वाली रुकावट चुनौती को सहजता से पार कर जाने का उनका स्वभाव ही था।(प्रशांत कुमार,पृष्ठ-34) उन्होंने हजारीबाग जेल से बाहर आते ही अपनी बिखरी टोली को संगठित करना तथा दमन से कुचली और निराश जनता के बैठे हुए दिलों में

क्रांति की चिनगारी फूंकना शुरू कर दिया। खूली और गुप्त गश्ती चिठ्ठियां (विज्ञप्तियां) जारी कर दी।(श्रीकृष्णदत्त भट्ट, पृष्ठ 39) वे विज्ञप्तियां, 1)आजादी के सैनिकों के नाम 2)अमेरिकन फौज के अफसरों और सैनिकों के नाम 3) विद्यार्थियों के नाम 4)किसानों के नाम 5)बिहार की जनता के नाम 6) बिहार के पुलिस सिपाहियों के नाम थी। इन विज्ञप्तियों को पढ़ने से आज भी आदमी अपनी नसों में खून की रवानी अनुभव करने लगता है। (रामवृक्ष बेनीपुरी,पृष्ठ 103)

भारत छोड़ो आंदोलन के नेता :-

जयप्रकाश ने हिंसा के जरिए अंग्रेजी हुकूमत को ध्वस्त करने पर बल अवश्य दिया। लेकिन यह भी हिदायत दी कि इसमें किसी की हत्या न हो। उन्होंने लिखा, "मुझे यह स्वीकार करने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं है कि यदि काफी बड़े पैमाने पर वीरों की अहिंसा का आचरण किया जा सके, तो हिंसा आवश्यक हो जाए लेकिन जहां ऐसी अहिंसा न हो वहां सात्विक वितंडावाद की आड़ में कायरता को क्रांति के मार्ग का रोड़ा नहीं बनने दिया जा सकता।" इस समय देश के सभी चोटी के नेता जेल के अंदर थे इसलिए जेल से भागने के बाद जयप्रकाश स्वाधीनता संग्राम के नायक के रूप में उभरे यहां तक कि ब्रिटिश सरकार ने भी अपनी विज्ञप्ति में उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन का नेता माना। गांधीजी ने कड़े शब्दों में इसका जवाब दिया। उन्होंने जयप्रकाश के विचारों से अपने कुछ मौलिक भेद स्पष्ट करते हुए उनके दुर्दम्य साहस, त्याग एवं अपरिमित राष्ट्रभक्ति की सराहना की और लिखा कि, "कोई भी देश ऐसे गुणों के लिए गौरवान्वित महसूस करेगा।" तोड़-फोड़कर जयप्रकाश सारी व्यवस्था को ठप कर देना चाहते थे। इसके लिए उन्हें एक सशस्त्र संगठन की आवश्यकता महसूस हुई। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'आजाद दस्ता' के गठन की योजना बनाई। उनका विचार था कि दस-दस की ऐसी टुकड़िया बनाई जाए, जिनका एक नायक हो। उन सबको हथियार चलाने और तोड़फोड़ करने का प्रशिक्षण दिया जाए और यह टुकड़िया छापे मारकर अंग्रेजों को परेशान करें। यह निश्चित किया गया कि नेपाल में इसके लिए एक थाना खोला जाए और वही लोगों को इस तरह का प्रशिक्षण दिया जाए।(सुधांशु रंजन,पृष्ठ70-73)

क्रांतिकारियों के पीछे अंग्रेजी सरकार हतबल :-

लेकिन खासतौर पर उनका जोर जैसे भी बने अंग्रेज सरकार की सारी व्यवस्था को गड़बड़ा देने पर रहता था। टेलीफोन और बिजली के तार काटना, पुलों को उड़ाना, डाक-घर आदि को जलाना, रेल की पटरीयों को उखाड़कर रेलवे के सारे व्यवहार को छिन्न-भिन्न कर देना, गुप्त संगठनों की रचना करना और तोड़फोड़ के ऐसे ही दूसरे कार्यक्रमों के जरिए देश में विदेशी हुकूमत को काम करने से रोकना। यही उनका उद्देश्य रहा। (नारायण देसाई और कांति शाह, पृष्ठ 342) आंदोलन के समय ही अमेरिका के उपराष्ट्रपति 'श्री विंडेल विल्की' भारत आने वाले थे। उनको भारत न आने के लिए उस समय के वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने लंदन मे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट को 31अगस्त,1942 को पत्र लिखा कि, वे अमेरिकी उपराष्ट्रपति की भारत यात्रा को स्थगित करा दे, कारण हमारा सारा सरकारी यंत्र आंदोलन का मुकाबला करने में व्यस्त है। यह विद्रोह सन् 1857 से बड़ा और व्यापक है।' यह वक्तव्य से ज्ञात होता है कि सरकार समाजवादी भूमिगत क्रांतिकारियों के पीछे कितनी हतबल थी।(अवधबिहारी लाल, पृष्ठ 68)

जयप्रकाश गिरफ्तार तथा गांधीजी द्वारा क्षोभ:-

भारत छोड़ो आंदोलन के क्रम में जयप्रकाश नारायण ने अपने समाजवादी साथियों के साथ उग्र रूप से अंग्रेजी प्रशासन को पंगु बनाने का कार्यक्रम चलाया तथा अरुणा आसफअली, राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन आदि उनके साथियों ने अपने संघर्ष का रूप कांग्रेस से भिन्न रखते हुए तेजी से चलाया जिसे 'समाजवादी तकनीक' कहा गया। (सुधाकरलाल श्रीवास्तव, पृष्ठ115-116) अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के उद्देश्य से जयप्रकाश ने कोलकाता में सुभाष बाबू से संपर्क कायम करने की योजना बनाई। उनके आजाद हिंद फौज और अपने आजाद दस्ता को मिलाकर एक तगड़ा सशस्त्र संगठन खड़ा किया जाए ऐसा वे चाहते थे। परंतु चाहते हुए भी सुभाष बाबू से संपर्क कायम करने में जयप्रकाश असफल रहे। (लक्ष्मीनारायण, पृष्ठ136) तथा अज्ञातवास में रहने वाले उनके साथियों ने सोचा कि अपनी लड़ाई में मदद के लिए अफगानिस्तान के लोगों से संपर्क किया जाए। इसके अनुसार जयप्रकाश दिल्ली से रावलपिंडी के लिए रेल के रास्ते रवाना हुए, किंतु 18 सितंबर 1943 को अंग्रेजों द्वारा अमृतसर स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिए गए। (नारायण देसाई,पृष्ठ 343) इस तरह दुर्भाग्यवश, जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया जैसे कांग्रेस समाजवादी पुनः गिरफ्तार किए गए। उन पर हिंसक कार्यों का आरोप लगाया गया। गांधीजी ने इनकी गिरफ्तारी पर क्षोभ व्यक्त किया तथा यह स्पष्ट घोषित किया कि, 'यदि जयप्रकाश के कार्य हिंसक है, तो हिंसा सिद्ध होनी चाहिए।' (सुधाकरलाल श्रीवास्तव,पृष्ठ11 6)

निष्कर्ष:-

वस्तुतः भारत छोड़ो आंदोलन में जयप्रकाश नारायण की भूमिका अत्यंत विप्लवकारी की ही। एक कर्मठ सेनानी के रूप में स्वतंत्रता को अपने जीवन का लक्ष्य मानते हुए जयप्रकाश ने आंदोलन को वह हवा दी जिसकी लहर में हजारों-लाखों भारतीयों को प्रेरणा शक्ति मिली। नि;संदेह जयप्रकाश का कार्य उग्र था और शक्ति के प्रदर्शन से ब्रिटिश साम्राज्यवाद तंत्र का सामना करना संभव नहीं था, किंतु संगठनात्मक रूप से जयप्रकाश ने जो कार्य किया तथा जो प्रेरक शक्ति उन्होंने भारतीयों में भारत छोड़ो आंदोलन के समय भरी उसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1.जमदग्नि अंजनी कुमार, जयप्रकाश नारायण, (राजनीतिक और सामाजिक विचार) प्रिंटवैल पब्लिशर्स जयपुर, प्रथम सं.1987

2. डॉ. श्रीवास्तव सुधाकरलाल, राष्ट्रीय आंदोलन और जयप्रकाश नारायण, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम सं.1991

3. लाल अवधबिहारी, संपूर्ण क्रांति के सूत्रधार, लोक नायक जयप्रकाश, नवभारत प्रकाशन दिल्ली, प्रथम सं.1977

4. रंजन सुधांशु, जयप्रकाश नारायण, निदेशक नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया नई दिल्ली, द्वितीय सं.2006

5. डॉ. लाल लक्ष्मीनारायण, जयप्रकाश, दि मैकमिलन कं. दिल्ली, प्रथम सं.1974

6. बेनीपुरी रामवृक्ष, जयप्रकाश, उषा प्रकाशन, मुंगेर, प्रथम सं.1975
7. कुमार प्रशांत, शोध की मंजिलें (जयप्रकाश नारायण की वैचारिक जीवनी) जयप्रकाश अमृतकोष, वर्धा, महाराष्ट्र, प्रथम सं. 1992
8. देसाई नारायण (अनु काशीनाथ त्रिवेदी), जयप्रकाश, जयप्रकाश अमृतकोष नई दिल्ली, प्रथम सं.1982
9. श्रीवास्तव सीता, लोकनायक जयप्रकाश नारायण वर्तिका प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम सं.1993
10. भट्ट श्रीकृष्णदत्त, भारत छोड़ो आंदोलन के सेनानी जयप्रकाश, सर्व सेवा संघ वाराणसी, तृतीय सं.1996